International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 9 Issue 2 Ser. I ||Feb, 2020 || PP.94-96

''किन्नौर की काष्ठकला का स्वरूप''

डॉ० हेमन्त कुमार राय
ऐसोसिएट प्रोफेसर
चित्रकला
एम. एम. एच. कॉलेज, गाजियाबाद

मीनाक्षी चंदेल
शोधछात्रा
मेवाड़ विश्वविद्यालय चितौड़गढ़

मनुष्य का काष्ठ से अटूट सम्बंध रहा है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त विविध रूपों में काष्ठ का अपयोग सर्वविदित है। कला संस्कृति का अभिन्न अंग है और कला के बिना संस्कृति का ज्ञान अपूर्ण है। मानव सभ्यता के साथ–साथ कला का भी विकास हुआ है कला के रसास्वादन से मनुष्यता की चेतना का गुणात्मक विकास होता है कला मानवता के स्वरूप को ही बदल देती है। ''अनेक भाषाओं में कला शब्द का अर्थ कौशल निपुणता, कौतुक, हुनर, खेल कोमल के रूप में प्राप्त होता है।'' ''अंग्रेजी भाषा में कला शब्द को आर्ट के रूप में लिया जाता है।'' हिमाचल के क्षेत्रों में मंदिरों के दरवाजों खिड़कियों व सतंभों पर उतकीर्णित की गई कलात्मक काष्ठकला मात्र मंदिरों में ही नहीं बल्कि पुराने
घरों में भी देखी जा सकती है ये कला प्रदेश के शिल्पियों की विचित्र कलाकारिता का प्रमाण है। लकड़ी पर उकेरित बेल–बूटों देवी–देवताओं की आकृतियों, मूर्तियों को काष्ठकला कहा जाता है। लकड़ी की नक्काशी हिमाचल के किन्नौर जनपद में एक जीवंत विरासत है जहां पहाड़ी कलाकार इसका उपयोग बक्से, सोफा, कुर्सियां, टोकरियां, रैक और अन्य वस्तुएं बनाने के लिए करते है। जोकि यहां के रोजमर्रा के जीवन में उपयोगी होते है। विभिन्न उपयोगी उत्पादों में लकड़ी का निर्माण एक कला का स्वरूप है।

''किन्नौर'' हिमाचल प्रदेश का एक सुन्दर 'जनपद' है। ''भारतीय वाङमय में किन्नरों के देश को किन्नर देश कहा गया है।'' जो प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को अभी तक संजोए हुए है। यह 'जनपद' अपनी प्राकृतिक सुंदरता रीति–रिवाज व प्राचीन व ऐतिहासिक इमारतों के लिए प्रसिद्ध हैं।

कई भव्य भवन व मंदिर आज भी उसी प्रकार सुरक्षित है। जिस प्रकार निर्मित किए गए थे। अपनी बर्फीली चोटियों के मनोरम दृश्य के बीच 'किन्नौर जनपद' अत्यंत लुभावना प्रतीत होता है। प्राकृतिक सुन्दरता और शांतमय स्वच्छ वातावरण के कारण ही किन्नौर को 'कैलाश पर्वत' के समकक्ष कहा जाता है। किन्नौर जनपद में ऐसे ही अनेक किले, मंदिर और ऐतिहासिक भवन हैं जोकि काष्ठ कला से निर्मित है। 'काष्ठकला' एक ऐसी कला है जिससे लकड़ी को सुंदर डिजाइनों की नक्काशी से सजाया जाता है। यहां लकड़ी पर नक्काशी करने की परम्परा बहुत पुरानी है। प्राचीन परम्परा से ही सबसे अच्छी नक्काशी मंदिरों पर की गई है। यहां के प्राचीन मंदिरों के दरवाजे बहुत सुंदर और आकर्षक बने होते थे, छतें इत्यादि भी विभिन्न काष्ठकला–शैलियों में बनी हुई हैं। यहां के प्रमुख 'काष्ठकला' निर्मित मंदिरों में कामरूनाग मंदिर, बद्रीनारायण मंदिर (बटसेरी), माथी देवी मंदिर, कोठी माता मंदिर, महेश्वर मंदिर, चीनी देवता मंदिर

(कल्पा), उषा देवी मंदिर और प्रसिद्ध काष्ठकला में निर्मित ऐतिहासिक किलों में 'मोरंग किला, लबरंग किला, कामरू किला इत्यादि प्रमुख है। आधुनिक युग में लकड़ी का महत्व और अधिक बढ़ गया है, लकड़ी से अनेक मंहगी वस्तुओं का निर्माण होने लगा है। प्राचीन समय में लकड़ी का प्रयोग व्यापक रूप से होता था परंतु आज के युग में वनकटाव के कारण इसकी कीमतों में लगातार वृद्धि होती जा रही है। पहले लकड़ी पर तरह–तरह की नक्काशी की जाती थी मंदिरों में, भवनों में, खम्बों व दरवाजों और खिड़कियों में विशेषकर, पहाड़ी इतिहास में लकड़ी का विशेष महत्व रहा है। और लकड़ी पर जो डिजाईन व नक्काशी की जाती थी वह उस जनपद की संस्कृति व लोककला पर निर्भर होती थी। लकड़ी पर नक्काशी करना, पत्थर पर नक्काशी करने से कहीं अधिक आसान होता था। इसके लिए अनेक तरह की लकड़ी पर 'काष्ठकला' उकेरी जाती थी, किन्नौर जनपद में यह कला, विशेषतया देवदार, शीशम, अखरोट, आदि की लकड़ी पर की जाती है।

'किन्नौर' जनपद को शिव की क्रीड़ास्थली माना जाता है। उँचे–उँचे बर्फ से ढके कैलाश पर्वत ऐसा लगता है। मानों साक्षात शिव वहां विराजमान हों और वह अपने भक्तों से साक्षातकार कर रहें हों। बौद्ध धर्म का भी किन्नौर में विशेष महत्व है। बौद्धिसत्वों के मठ व बौद्ध मंदिर वहां के ग्रामीण क्षेत्रों में भी विद्यमान है। यह जनपद अपनी सांस्कृतिक धरोहर को अभी भी संजोकर रखे हुए हैं।

मंदिरों की काष्ठकला

हिमाचल के किन्नौर जनपद में लकड़ी पर की जाने वाली उत्कीर्णता काष्ठ नक्काशी कहलाती है। भारत में हिमाचल उन क्षेत्रों में से एक है जहां लकड़ी ने एक रचनात्मक सामग्री के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिमाचल प्रदेश में चील, देवदार, अखरोट आदि के पेड़ बहुतायत में देखने को मिलते है। यहां के मंदिरों की काष्ठकला प्रसिद्ध है काष्ठ मंदिर की स्थानीय परंपरागत शैली में शिखर शैली का भी बड़े सुन्दर ढंग से मिश्रण हुआ है। ऐसे मंदिरों में तिकोनी ढलवां छत होती है। इन छतों में स्लेटों का नहीं बल्कि लकड़ी के तख्तों का प्रयोग भी कहीं–कहीं हुआ है। इन छतों में ढलान अधिक रखी गई है। इन मंदिरों का निर्माण ऊँचे अधिष्ठान पर हुआ है। गर्भगृह पर ऊँचा विमान है। इसकी छत में भी लकड़ी के तख्तों का प्रयोग किया गया है। गर्भगृह के साथ ही सभामण्डप है जिसमें काष्ठ स्तम्भ है। सभामण्डप की छत भी ढलानदार है। किन्नौर के इन काष्ठ मंदिरों की अलग खासियत है कि इनके काष्ठ स्तम्भों, द्वारों, छज्जों, तख्तों और खिड़कियों, बालकनियों आदि पर काष्ठ की सुन्दर नक्काशी की गई है।

इसमें पौराणिक देवी–देवताओं के चित्रण पशु–पक्षी, फूल–पत्ते आदि अभिप्रायों का अंकन हुआ है। और कहीं–कहीं काष्ठ पैनल पर डरावने चित्रों का अंकन होता है कि इससे देवता की भक्ति का पता चलता है। जिसके प्रभाव से अनिष्टकारी शक्तियां भूत–प्रेत, डाकिनी, आदि सब दूर ही रहते हैं मंदिरों के स्तंभों पर की गई काष्ठकलाकृतियां जैसेकि गंगा, जमुना, नदी, आदि देवियों की मुर्तियां प्रतिबिम्बित है। शिरदल, नवग्रहों की मूर्तियां, गणेश की मूर्तियां जयामीतिय कलाकृतियां और फूल–पत्तियों का आलंकरण किया गया है। वहीं शिखर शैली के प्रसार मंदिरों के बाहय् दीवार पर जो आलंकरण होता है। वह शिखर शैली के काष्ठ मंदिरों के अन्दर की साज–सज्जा से प्रफुल्लित हो उठा है।
इन सभी काष्ठ मंदिरों में शिखर शैली की मूल अवधारणा सम्माहित है। और इनकी काष्ठकला भारतीय वाङ्मय से उद्धृत दृश्यों प्रतीकों अभिप्रायों तथा आलंक

रणों को ही दर्शाती है। सराहन में भीमाकाली मंदिर के अतिरिक्त चौपाल में बीजट देवता का मंदिर और इसी देवता का एक अन्य मंदिर चौपाल के ही जोरण गांव में स्थित है। स्थापत्य कला का एक और मंदिर जुब्बल बाजार में स्थित महासु देवता, ठाकुरद्वारा, शिवद्ववाला में भी देखा जा सकता है। वैसे इस शैली के मंदिर जिले में और जगह भी है। इन मंदिरों की वास्तुशैली की परख इसके छत के आकार से होती है। एक वर्गाकार भुखण्ड पर बने इन मंदिरों की छतों के सभी किनारों की लम्बाई पहले तो समान रहती है। फिर धीरे–धीरे छत की ओर केन्द्र की तरफ बढ़ते हुए इसका घेरा तंग होता चला जाता है। इस प्रकार केन्द्र में एक पिरामिड के आकार को ग्रहण कर लेता है। मंदिर की छत पर एक कलश

रहता है। चौपाल के गांव दवास में डूडी देवी का मंदिर भी इसी शैली में किया गया है।

और इस प्रकार किन्नौर के मंदिरों में काष्ठकला का प्रयोग किया है।
निष्कर्षः काष्ठकला मानव द्वारा निर्मित एक अभिव्यक्ति है। काष्ठकला कल्याण की जननी है। काष्ठकला को भिन्न भिन्न प्रकार से निर्मित किया जाता है। और इसको कुछ विद्वानो द्वारा परिभाषित भी किया गया है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेद
ी के अनुसार ''विचारों के दृश्यतों के आधार पर 'काष्ठकला' को महामाया का चिन्मय विलास कहा गया है।''
पाश्चात्य विद्वान हर्मन गॉटेज के अनुसार ''हिमाचल के मंदिरों में उपलब्ध काष्ठकला को अद्वितीय कलाकृतियां माना गया है।''
''श्री के. एल. वैद्य के अनुसार ''काष्ठ मंदिरों की बहाय, दीवार पर अंकित आलंक
रण व शिखर शैली की मूल अवधारणा तथा भारतीय वाङ्मय से उद्धृत दृश्यों प्रकरणों, प्रतीकों के प्रतिबिम्बित रूप को ही काष्ठकला कहा जाता है।'' इसके अतिरिक्त किन्नौर जनपद में भी अनेक
गावों में बडे पैमाने पर लकड़ी के घरेलू बर्तनों का प्रयोग होता था। पाश्चात्य्
संस्कृति के प्रभाव में आने के कारण हिमाचल राज्य में काष्ठ निर्मित कुर्सियां, मेज, और अलमारियां, फ्रेम आदि का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। इसके अतिरिक्त मंदिर के रथ

पाल्कियां,
लकड़ी के खंडाऊ, काष्ठ निर्मित मोहरें आदि का उपयोग भी अतीत में किया जाता रहा है। हिमाचल प्रदेश के वनों में अधिक्तर काष्ठ, अखरोट और देवदार की लकड़ी पाई जाती है। यहां के अधिक्तर गांवों में बड़े पैमाने पर नक्काशी के साथ–साथ दरवाजें,
खिड़कियां बालकनी आदि पर उत्कृष्ट नक्काशी के दर्शन होते है। आज भी कुछ काष्ठ

कलाकार काष्ठकला में सन्दर्भ :–
रूची रखते है। अपनी कला से लागों को आकर्षित करते है।

1. रामप्रताप त्रिपाठी, मानक अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश, पृ0 सं0 61
2. रामचंद्र वर्मा संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, पृ0 सं0 178
3. टाशी छेरिंग नेगी, किन्नर देश का इतिहास, पृ0 सं0